Name : **Dr. Sunil Vasantrao Salunke**

No.F **23-3037/11 (WRO)** dated **22 February 2012**

Title of the Project: **" Samkhya tatha Vaisheshik Darshananusar Srushti Utpatti Vishayak Mataonka Tulnatmak Adhyayan"**

Report of the Work Done

सृष्टी निर्माण का तत्त्व द्रव्य (Substance) को माना जात है। इसी द्रव्य का अध्ययन दर्शन की जिस शाखा में किया जाता है उसे अतिभौतिकीय शास्त्र (Metaphysics) कहा जाता है।

वर्तमान संदर्भ में तत्त्वमिमांसा दर्शन की ऐसी शाखा है की जो सृष्टी का प्रारंभिक तत्त्व (Original Stuff) अथवा आदि कारण (First cause) का विवेचन करता है। अनुभविक जगत का अंतिम तत्त्व (Ultimate basic)क्या है? और उसका स्वरुप कैसा है? इस अंतीम तत्त्व को परमसत्ता अर्थात् पारमार्थिक सत् (Ultimate Reality) कहा जाता है। पारमार्थिक सत् वह है की, जो सृष्टीका अंतीम आधार है। जो स्वयं स्वयंका आधार है और सृष्टी की सभी वस्तुओं का पर्याप्त कारण है।

अंतिम तत्त्व अर्थात द्रव्य के विषय में कुछ समस्याएँ निर्माण होती है। एक समस्या यह है की हमारा अनुभविक जगत् आभासी है या वास्तव है? इस द्वंद का समाधान कैसे करें? दूसरी समस्या यह है की जिसे हम द्रव्य कहते है, वह केवल गुणों का समुच्चय मात्र है या उन गुणों से अलग कुछ है?

सृष्टी का प्रारंभिक(मूल) तत्त्व क्या है? यह दर्शन का मूलभूत प्रश्न है। इसी प्रश्न से दो उपप्रश्न निर्माण होते है। इस मूलतत्त्व का स्वभाव अथवा स्वरुप (Nature) कैसा है? और इनकी संख्या कितनी है? इन प्रश्नों के भिन्न उत्तर दिये गये। जिसकी वजह से द्रव्यविषयक भिन्न भिन्न विचारधाराएँ निर्माण हुअी।

द्रव्य के स्वरुप के विषय में जो प्रश्न निर्माण हुआ उसके चार उत्तर दिये गये।

१. द्रव्य भौतिक अथवा जड स्वरुपी है।(भौतिकवाद)
२. द्रव्य चेतन अथवा अध्यात्मिक है। (आत्मवाद)
३. द्रव्य चेतन और जडस्वरुपी है। (द्वैतवाद)
४. द्रव्य चेतन और जडस्वरुपी हन दोनों से भिन्न है। (तटस्थवाद)

द्रव्य की संख्या के दृष्टीसे तीन प्रकार के उत्तर दिये गये।

१. द्रव्य एक ही है। (एकतत्त्ववाद)
२. द्रव्यों की संख्या दो है। (द्वैतवाद)
३. द्रव्यों की संख्या अनेक है। (बहुतत्त्ववाद)

ख्रिस्तपूर्ण काल (ख्रि.पू. ६००) से ख्रिस्तोत्तर काल का आधुनिक दार्शनिक इमॅन्युएल कांट (ख्रि.१८ वी शताब्दी का अंत) तक द्रव्य के संबंध में व्यापक चिंतन हुआ है। २१ वी शताब्दी में भी उसका चिंतन चल रहा है। लेकीन इस चिंतन में समानता कम और भिन्नता ही अधिक पायी जाती है। फिरभी आयोनियन संप्रदाय ने शुरु किया हुआ सृष्टी निर्माण का प्रश्न अपने तरीके से सुलझाने का प्रयत्न हर एक विचारधाराने किया है।

अंतिम तत्त्व अर्थात द्रव्य विषयक चिंतन यह दर्शन का केंद्रबिंदू है। दर्शन का उद्‌गम तथा विकास इसी संकल्पना पर आधारित है, ऐसा कहा जा सकता है। यह चिंतन परंपरा आज भी रुकी नही। प्रत्येक विचारधारा का मत आंशिक रुप से स्वीकार्य हो सकता है। साथ ही प्रत्येक विचार मे कुछ कमीयाँ भी रहा गयी है। इन सभी समानता तथा भिन्नता का समग्रता से, चिंतन हो कर एक सर्वमान्य निष्कर्ष तक जाना दर्शन का लक्ष्य है।

अध्ययन का उद्देश : (Objectives of Study)

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत हमें केवल सांख्य तथा वैशेषिक दर्शन के सृष्टिनिर्माण विषयक मतों का विचार विमर्श तथा तुलना करना है। सांख्य दर्शन का विकासवाद (उत्क्रांतिवाद) तथा वैशेषिक दर्शन का परमाणुवाद इन दोनों विचारों का तुलनात्मक अध्ययन कर कौनसा मत अधिक स्वीकार करने योग्य है, अथवा इन दोनों मतों का समन्वय करना संभव है क्या? यह देखना प्रमुख उद्देश है। साथ ही इन दोनों दर्शनों के मतों के तुलना आधुनिक विज्ञान के सृष्टि निर्माण के मतों से करना यह भी उद्देश्य है।

शोध पध्दती :(Research Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रमुखतः विश्लेषण तथा तुलना इन शोध पध्दतियों का उपयोग करना है।

अवधारणा :(Hypothesis)

आधुनिक विज्ञान का सृष्टिनिर्माण विषयक मत सांख्य तथा वैशेषिक दर्शन के सृष्टि निर्माण विषयक मतोंका समन्वय है।

आंतरशाखीय उपयुक्ता :(Inter Desciplinary Utility)

सांख्य, एवं वैशेषिक दर्शन का जगत की सृष्टि संबंधी विचार प्राचीन तम माना जाता है। वर्तमान युग में निसर्ग विज्ञान में भी ऐसा विचार आज तक किया जा रहा है। परंतु इस संदर्भ में आज तक कुछ निश्चित निष्कर्ष प्राप्त नही है। इसलिए दार्शनिक विचारोंका विज्ञान में स्वीकार अथवा वैज्ञानिक अध्ययन के निष्कर्ष स्वरुप कुछ अन्य समन्वयात्मक निष्कर्ष निकालना संभव हो सकता है।

निष्कर्ष :(Findings)

मूलतः दर्शन एवं विज्ञान का एक ही लक्ष्य होता है- सत्य का अनुसंधान। किन्तु दोनों के साधन भिन्न होते है। दर्शन अंतर्ज्ञान की शक्ति के आधार पर सत्य तक पहुँचता है तो विज्ञान बौध्दिक शक्ति के आधार पर। दर्शन तर्क के आधार पर निष्कर्ष निकलता है, तो विज्ञान अनुभव अर्थात प्रयोग के आधारपर। विज्ञान एवं दर्शन भिन्न होते हुए भी निकट है तथा परम्पर पूरक है। एक स्थिती पर दोनों का भेद विलीन हो जाता है।

भारतीय दार्शनिकों ने अध्यात्मक जगत के साथ सृष्टि तत्त्व एवं उसके उपादान रुप पदार्थ या जडतत्त्व के सम्बन्ध में भी गंभीर चिन्तन किया है। सांख्य-योग,न्याय-वैशेषिक, आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों का मूलभूत तात्विक अभिप्राय यह है कि सृष्टि का मूल अणु या परमाणु है। जिसे जैन दर्शन ने पुद्गुल कहा। आधुनिक विज्ञान भी इस मत से सहमत है। आधुनिक विज्ञान की गति स्थूल से सूक्ष्म के अध्ययन प्रति है। सूक्ष्म से स्थूल की ओर आना ही सृष्टि है।

विज्ञान के अध्ययन का आरम्भ स्थूल पिण्ड आदि के अध्ययन से होता है। फिर उसका विभाजन विश्वेषण फिर उसका विभाजन विश्लेषण। इस तरह उसके मूलतत्त्व अणु परमाणु तक पहुँचता है। जबकि दर्शन के अध्ययन का आरम्भ ही उस पिण्ड के सूक्ष्म तम कण अणु या परमाणु से होता है। विज्ञान जिसे परमाणु मानता है दर्शन उसे परमाणु से भी परे एक शक्ती तत्त्व को स्वीकारता है जो परमाणु में गति उत्पन्न करता है। विज्ञान भी परमाणु के मूल में इलेक्ट्रॉन, प्रोट्रॉन को मानता है किन्तु इनका जन्मदाता कौन है? विज्ञान यह नही बतला सका है। अन्ततः विज्ञान को भी दर्शन के अन्तिम सत्य सर्व खल्विदं ब्रह्म या अज्ञात तत्त्व में आकर विश्राम करना पडता है। इस प्रकार दर्शन व विज्ञान परस्पर भिन्न होकर भी अन्त में एक ही महासागर में लीन हो जाते है।

दर्शन का मुख्य कार्य है किसी भी विषय के बारे में चिंतन करना तथा उसी विषय के बारे में कुछ अवधारणाएँ बनाना। विज्ञान का कार्य है उन्ही अवधारणाओं को प्रत्यक्ष अनुभव अथवा प्रयोग के आधारपर प्रमाणित करना। वर्तमान में विज्ञान के बहोत से सिध्दान्त ऐसे है जिनकी अवधारणाएँ हमें विभिन्न दर्शनों से प्राप्त होती है। सृष्टि निर्माण विषय में आधुनिक विज्ञान का मत सांख्य तथा वैशेषिक दर्शन के दृष्टि निर्माण विषयक मतों का समन्वय है।

Dr.Sunil V.Salunke